① Lecture Series No:-17.

online class.
Date-7/2/2022
Day:
Time-10:40 to 10:50 A.M

Topic.

(1) Buddhism

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy,
B.A Part-I
Paper-(5.)
A.N.D. College Shahpur Patory,
Samastipur.

Ans:-) महात्मा बुद्ध ने बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद सर्वप्रथम काशी के निकट सारनाथ में अपना प्रवचन दिया जिसका संकलन धर्म-चक्र प्रवर्तन सूत्र में मिलता है। यहीं पर इन्होंने चार आर्य (सत्य) तत्वों का अमृत संदेश मानव को दिया, इनके इन्हीं चार आर्य सत्यों में इनके शिक्षा का सारांश निहित है। इन चार आर्य सत्यों में प्रथम दुःख के स्वरूप तथा दूसरा आर्य सत्य दुःख के कारणों का विवेचन उपस्थित करते है। महात्मा बुद्ध के अनुसार संसार का समस्त कार्य-व्यापार दुःखमय है। मानव तथा मानवेतर जीवन सभी दुःख

P.T.O.

से परिपूर्ण है। सर्वम दुःख
जन्म जरा, रोग मृत्यु, शोक,
क्लेश = आशंका और नैराश्य
सभी आसक्ति से उत्पन्न होते हैं
आशंका :-
नैराश्य से आसक्ति से उत्पन्न है।
अतः ये सभी दुःख है। इसके
अतिरिक्त वे सभी बातें भी दुःख हैं।
जिन्हें हम सुख मानते हैं। विषय
भोग, इन्द्रिय सुख - ऐश्वर्य, विलास,
मान - सम्मान सन्तति, धन सभी दुःख
हैं, क्योंकि ये आसक्ति से
उत्पन्न होते हैं। संक्षेप में उन्होंने
रूप (Body), वेदना (Feeling),
संज्ञा, संस्कार और विज्ञान (Reason)
इन पाँचों उत्पादन स्कंधों को
दुःख कहा हैं। पाँचों स्कंधों का
ज्ञान प्रथम आर्य सत्य का ज्ञान है

P.T.O